12. नरेश मेहता

कवि परिचय –

नरेश मेहता का जन्म 15 फरवरी सन् 1922 ई. में मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र के शाजापुर कस्बे में हुआ। आपकी शिक्षा माधव कॉलेज, उज्जैन में हुई। स्नातकोत्तर उपाधि हिन्दी विषय के साथ बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से प्राप्त की। सन् 1942 में 'भारत छोड़ो आंदोलन' में सक्रिय रूप से भाग लिया। रेडियो इलाहाबाद में आप कार्यक्रम अधिकारी भी रहे। अज्ञेय द्वारा सम्पादित 'दूसरे तार सप्तक' के कवि के रूप में आप प्रतिष्ठित हुए। सन् 2000 में आपका निधन हो गया।

नरेश मेहता एक ऐसे कवि रहे हैं; जिन्होंने अपने कवित्व को सदैव मतवादी संकीर्णता से बचाए रखा है। यही कारण है कि उनकी कविताएँ आधुनिक होते हुए भी आधुनिकता का ढिंढोरा पीटते नजर नहीं आती। इनके द्वारा रचित काव्य संग्रह 'चैत्या', 'प्रवाद पर्व', 'अरण्या', 'पुरुष' आदि हैं। इसके अलावा भी आपकी अनेक काव्य रचनाएँ हैं। उनमें से प्रमुख काव्य कृतियाँ – 'बनपांखी सुनो', 'बोलने दो चीड़ को', 'मेरा समर्पित एकांत', 'उत्सवा', 'तुम मेरा मौन हो', 'संशय की एक रात', 'महाप्रस्थान' तथा 'शबरी' आदि हैं।

पद्य के साथ-साथ आपने महत्त्वपूर्ण गद्य रचनाएँ भी की हैं। इनके प्रमुख उपन्यासों में 'यह पथ बंधु था', 'धूमकेतु एक श्रुति', 'नदी यशस्वी है', 'दो एकांत', 'प्रथम फाल्गुन', 'डूबते मस्तूल' तथा 'उत्तर कथा' आदि हैं। इन उपन्यासों के अलावा दो कहानी संग्रह और दो एकांकी संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं।

इनकी कविताएँ सरलता एवं सरसता लिए होती हैं। सरल, सीधे बिम्बों का प्रयोग तथा मानवीकरण, उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों की छटा इनके काव्य में दर्शनीय है। रागात्मकता, संवेदना एवं उदात्तता आदि सर्जना के मूल तत्त्वों का प्रयोग इनकी कविताओं की विशेषताएँ हैं। इनकी कविताओं में संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग यथा स्थान मिलता है।

इंदौर से प्रकाशित होने वाले दैनिक 'चौथा संसार' का संपादन भी मेहता जी द्वारा किया गया। साहित्य अकादमी द्वारा इन्हें सन् 1988 में पुरस्कृत किया गया। इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार भी सन् 1992 में दिया गया।

पाठ परिचय –

इस अध्याय में नरेश मेहता की तीन छोटी-छोटी कविताएँ ली गई हैं। **'किरण-धेनुएँ'** कविता में कवि प्राकृतिक सौन्दर्य को अलौकिकता से दूर हटा कर जन-जीवन से जोड़ता है। छायावाद के कल्पना लोक से निकलकर लोगों के सामान्य जीवन के यथार्थ का चित्र खींचता है। प्रस्तुत कविता में सूर्योदय के प्राकृतिक सौन्दर्य में सुनहरी किरणें गाय की, सूर्य ग्वाले का, प्रातःकालीन बादल गायों के मुख से टपकते फेन के प्रतीक हैं। कवि की कविता का उद्देश्य स्वप्नलोक से निकल वास्तविक जगत् से परिचय कराना है।

दूसरी कविता 'विडम्बना' में मानव मन का तार्किक और वस्तुनिष्ठ विश्लेषण किया गया है।

तिलस्मी पक्षी के प्रतीक के माध्यम से कवि यह बताना चाहता है कि हम यथार्थ में रहते हुए वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ सत्य तक पहुँचें। यदि भ्रम की स्थिति में रहते हुए गलत तर्कों के सहारे कोई निष्कर्ष निकालते हैं तो वह मानव के हित में नहीं होगा एवं सत्य कभी भी सामने नहीं आएगा।

तीसरी कविता 'एक बोध' में कवि आधुनिकता और प्राचीन संस्कारों के बीच अनिर्णय की स्थिति बहुत अच्छी तरह प्रस्तुत करता है। इस मशीनी युग से प्राचीन परम्पराओं एवं संस्कारों युक्त मानव जब जुड़ने की कोशिश करता है तो वह कुछ छूटा कुछ टूटा हुआ महसूस करता है। उसे अधूरेपन का अहसास होता है। यह मानव के लिए एक भयावह समस्या है कि मानव इस तथाकथित आधुनिकता को अपनाने के फेर में कहीं बीच रास्ते में ही भटक कर अपना अस्तित्व न खो दे।

मूल पाठ –

किरन-धेनुएँ

उदयाचल से किरन-धेनुएँ
हाँक ला रहा
वह प्रभात का ग्वाला।
पूँछ उठाये चली आ रही
क्षितिज-जंगलों से टोली
दिखा रहे पथ इस भू मा का
सारस सुना-सुना बोली
गिरता जाता फेन मुखों से
नभ में बादल बन तिरता
किरन-धेनुओं का समूह यह
आया अंधकार चरता।
नभ की आम्रछाँह में बैठा
बजा रहा वंशी रखवाला।
ग्वालिन सी ले दूब मधुर
वसुधा हँस-हँसकर गले मिली
चमका अपने अपने स्वर्ण-सींग वे
अब शैलों से उतर चलीं
बरस रहा आलोक-दूध है
खेतों खलिहानों में
जीवन की नव-किरन फूटती

मकई के धानों में
सरिताओं में सोम दुह रहा
वह अहीर मतवाला।

विडम्बना

सत्य की शोध में
मैंने उस दिन अपने सम्पाती को भेजा
सूर्य ओर
और वह जाने किन आकाशों से
टूटकर लौट आया।
उसे विनेत्र देख
मैंने कहा
सत्य आग्नेय है।
उसे झुलसे देख
मैंने कहा
सत्य तेजस है।
उसे लौटे देख
मैंने कहा–
सत्य अप्राप्य है।
लोगों ने तपस्वी सम्पाती को नहीं
मुझे ऋषि कहा।

एक बोध

अब मिहिर सिर आ गया
तपने लगी यह रेत।
रह गए पीछे
जिनके कुन्तलों की छाँह में
हुआ सूर्योदय हमारा।
बहुत कुछ छूटा–
और टूटा भी,
हम असंगी
स्मरण-बैसाखी सहारे चल रहे।
रेत के पदचिह्न क्या ?

ये ही हमारे लिए अनुधावित रहे
इनकी मैत्री क्या!
अब हमारे और उस छूटे विगत के बीच
सम्बन्ध है तो यह कि
हम प्रव्रजावसित हैं–
ऋतु अभिषेक सिर पर झेलते
भाल पर संकोच रेखा
विवशताएँ कण्ड में
अनागत यात्रा, सम्मुख तवे सी जल रही
हम आयु के अश्वत्थ
अपनी छाँह भी स्वीकार जिसको है नहीं।

शब्दार्थ –

किरण-धेनुएँ

उदयाचल – पूरब दिशा/ ग्वाला – गाय चराने वाला, सूर्य/ फेन – झाग/ वसुधा–धरती/ आलोक – प्रकाश, रोशनी/ सरिताओं – नदियों/ अहीर – पशु पालन एवं दूध का व्यवसाय करने वाली जाति/ किरण–धेनुएँ – किरण रूपी गायें/ भू मा – खेत, पृथ्वी/ हाँक ला रहा – गायों के पीछे रहकर उन्हें चला रहा/ शैलों – चट्टानों/ खलिहानों – वह स्थान जहाँ काटी हुई फसल रखी और माँडी जाए/ सोम – अमृत/मतवाला – गर्व से इतराता हुआ।

विडम्बना –

शोध – तलाश, खोज, नवीन अन्वेषण/ विनेत्र – अंधा/झुलसे – जले हुए/ तपस्वी – तपस्या करने वाला/ संपाती – एक पौराणिक काल्पनिक पक्षी, गरुड़ का बड़ा पुत्र व जटायु का बड़ा भाई/ आग्नेय – अग्निवत्, अग्नि–सम्बन्धी, अग्नि जैसा/ तेजस – तेज, शक्ति/ ऋषि – वेद मंत्रों का साक्षात्कार और प्रकाशन करने वाला, बड़ा तपस्वी।

एक बोध –

मिहिर – सूर्य (कविता में पूँजीवादी संकट)/ असंगी – जिसके कोई साथ न हो/ अनुधावित – मात्र पिछलग्गु, जिसका अनुसरण किया जाए/ मैत्री – मित्रता/ भाल – माथा, ललाट/ अश्वत्थ – सूर्य का एक नाम, साहित्य में प्रयुक्त व्यंग्यात्मक प्रतीक जो उल्टे की तरफ इशारा करता है/ कुन्तलों – सिर के बालों/ बैसाखी – वह लकड़ी जिसके सहारे पैर विहीन चलते हैं/ प्रव्रजावसित – देश या स्थान छोड़कर गया हुआ/ अनागत – भावी, आनेवाला, अचानक।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'किरण धेनुएँ' कविता में प्रभात के ग्वाले को मार्ग कौन दिखा रहा है ?

(क) कोयल (ख) कबूतर

(ग) गधा (घ) सारस ( )

2. 'विडम्बना' कविता में सत्य की खोज के लिए कवि किसे भेजता है ?

(क) सम्पाती को (ख) गरुड़ को

(ग) जटायु को (घ) कुरजा को ( )

3. 'एक बोध' कविता में सिर पर कौन आ गया है ?

(क) कौआ (ख) उल्लू

(ग) मिहिर (घ) चन्द्रमा ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'किरण-धेनुएँ' कविता में खेतों–खलिहानों में क्या बरस रहा है ?
2. 'किरण-धेनुएँ' कविता में शैलों से उतरकर कौन चली आ रही है ?
3. 'विडम्बना' कविता में कवि सम्पाती को किसकी खोज में भेजता है ?
4. 'विडम्बना' कविता में सम्पाती को विनेत्र देखकर कवि ने सत्य को क्या कहा ?
5. 'एक बोध' कविता के अनुसार हमारे लिए अनुधावित क्या रहा है ?
6. 'एक बोध' कविता में हम आयु के अश्वत्थ को क्या स्वीकार नहीं है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. कवि ने सूर्य की तुलना प्रभात के ग्वाले से क्यों की है ?
2. किरण-धेनुओं के लिए स्वर्ण-सींग चमकाकर शैल से उतरने की बात कवि क्यों कहता है ?
3. 'विडम्बना' कविता में कवि सत्य को अप्राप्य क्यों कहता है ?
4. लोगों द्वारा सम्पाती को ऋषि न बताकर कवि को ऋषि क्यों कहा गया है ?
5. 'एक बोध' कविता में कवि का प्रव्रजावसित से क्या तात्पर्य है ?
6. कवि को भाल पर संकोच और कण्ठ में विवशताएँ क्यों दिखाई देती हैं ?

निबंधात्मक प्रश्न –

1. ''नरेश मेहता प्रकृति के अनुपम चितेरे हैं।'' पाठ्य पुस्तक में दी गई इनकी कविताओं के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
2. 'विडम्बना' कविता में छिपे व्यंग्य को कविता में दिए गए उदाहरणों द्वारा स्पष्ट कीजिए।
3. 'एक बोध' कविता के अनुसार हमारी स्थिति कैसी है?और क्यों है?
4. पाठ में आए निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

(क) स्मरण-बैसाखी ..... हम प्रव्रजावसित हैं।

(ख) गिरता जाता फेन ..... वंशी रखवाला।